नालन्दा मुक्त विश्वविद्यालय

स्नातकोत्तर -प्रथम वर्ष

गोदान की त्रासदी

गोदान प्रेमचंद का महाकाव्यात्मक उपन्यास माना जाता है। इस उपन्यास में प्रेमचंद ने ग्रामीण कथा और नगरीय कथा को समानांतर रखकर उस दौर की सबसे बड़ी समस्या किसान की त्रासदी को दिखाया है और उस त्रासदी से निपटने की समस्या के समाधान पर भी गंभीरता से विचार किया है । प्रेमचंद ने जिस तरह से ग्रामीण और नगरीय कथा की योजना की है उस पर आलोचकों में मतभेद है । शांतिप्रिय द्विवेदी ने इस संबंध में लिखा है -" नगर की कथा से जुड़े हुए कई अंश यदि उपन्यास से निकाल दिए जाएं तो उपन्यास का आकार भी संतुलित हो जाएगा और कथानक में कसावट आ जाएगी ।" इसके विपरीत नलिन विलोचन शर्मा दोनों कथाओं की प्रासंगिकता और अनिवार्यता सिद्ध करते हुए इसे समानांतर स्थापत्य शिल्प की संज्ञा देते हैं वे लिखते हैं -"जिस तरह नदी के दो तट असम्बद्ध दिखते हैं पर वे वस्तुतःअसम्बद्ध नहीं रहते - उन्हीं के बीच से जलधारा बहती है । इसी तरह गोदान की असम्बद्ध सी दिखने वाली दोनों कहानियों के बीच से भारतीय जीवन की विशाल धारा बहती चली जाती है ।"

गोदान में नायक होरी की मृत्यु लू लगने से होती है । यह गोदान में त्रासदी का अल्पांश है बहुलांश तो वहां है जहां होरी वर्षों तक संघर्ष करता है और अपनी छोटी-छोटी इच्छाओं की पूर्ति नहीं कर पाता है । वे इच्छाएं हैं दरवाजे पर एक गाय रखना, किसान बने रहना, मजदूरी नहीं करना और बेटी को बेचना नहीं बल्कि प्रतिष्ठा पूर्वक अच्छे घराने में उसका विवाह करना । संपूर्ण जीवन संघर्षों में उसकी यह इच्छाएं उसे पराजित कर जाती है । त्रासदी का मूल तो यही है ना की होरी की मृत्यु। उसकी वे इच्छाएँ उसके मौत के साथ चली जाती है - वह गाय पाल नहीं पाता है, विवाह के लिए उसे बेटी बेचनी पड़ती है ,जमीन उसे गिरवी रखनी पड़ती है और मजदूरी करनी पड़ती है । यही मजदूरी उसके मौत का कारण भी है । ईख के खेत में मजदूरी करते करते उसे लू लग जाती है और अंततः वह मर जाता है ।

गोदान के माध्यम से प्रेमचंद ने त्रासदी को मानवीय संवेदना का प्रमुख अंग माना है । प्रेमचंद ने गोदान में उन समस्याओं को चित्रित किया है जो वर्तमान युग से जुड़ी है और जिन्हें हर व्यक्ति अनुभव करता है। प्रेमचंद एक ऐसे समाज का निर्माण करना चाहते थे जहां भेदभाव के अभिशाप से मानवता पीड़ित ना हो । किसी प्रकार का शोषण ना हो और आदमी की पहचान संपत्ति और जाति के पैमाने से ना हो । गोदान में उनका यही उद्देश्य प्रमुखता से व्यक्त हुआ है । इस उपन्यास का प्रधान उद्देश है कि कृषक जीवन की समस्याओं का चित्रण करना । उसके शोषण का चित्र प्रस्तुत करना और उसकी दिन-हीन स्थिति से समाज को परिचित कराना। किसान का शोषण कौन करता है तथा उसका शोषण कितने मुहांनों पर होता है और उस शोषण के लिए समाज के कौन-कौन लोग उत्तरदाई हैं - इसका सजीव चित्रण गोदान में किया गया है ।

आवश्यक निर्देश - समस्त विद्यार्थीगण को निर्देशित किया जाता है कि वह इसी तरह अन्य पाठों का भी अध्ययन कर पाठ के मूल भाव को समझें । उससे संबंधित प्रश्न उत्तर का अभ्यास करें। विश्वविद्यालय द्वारा प्रदत पाठ्य सामग्रियों में मूल पाठ के साथ पाठ का सारांश, उसका उद्देश्य ,लेखक परिचय जैसे आवश्यक तत्व संकलित हैं जिसका अध्ययन विद्यार्थियों के लिए अति आवश्यक है ।

डॉ. बद्रीनारायण सिंह

समन्वयक हिन्दी विभाग

नालंदा मुक्त विश्वविद्यालय